६. दारागंज के वे दिन

- पुष्पा भारती

उम्र के जिस दौर से गुजर रही हूँ, उसमें या तो नाती-पोतों के साथ खेलना और उलझना अच्छा लगता है या फिर यादों की जुगाली करने में आनंद आता है । आज वसंत पंचमी पर याद आ रहे हैं महाकवि सूर्यकांत 'निराला'। बात १९५१ की है, तब मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी.ए. में पढ़ती थी । घर मेरा, दारागंज में था । पिछवाड़े रहते थे महाप्राण निराला । अपने घर के बैठक की बालकनी में खड़े होकर सड़क की ओर देखने पर प्रायः प्रतिदिन ही सुबह-सुबह निराला जी के दर्शन हो जाते थे । दारागंज में हमारे घर के बहुत पास ही गंगा जी का घाट है । तहमद लपेटे नंगे बदन पैदल चलते हुए वह गंगा स्नान के लिए जाते थे । देवतुल्य सुदर्शन व्यक्ति, ऊँची, लंबी, पुष्ट देहयष्टि, उन्नत ललाट, चौड़ी छाती-मदमाती चाल । कोई चाहे न चाहे, हर देखने वाले का माथा झुक जाता और हाथ प्रणाम की मुद्रा में खुद-ब-खुद जुड़ जाते ।

एक दिन तो ऐसा सौभाग्य मिला कि यूँ दूर से प्रणाम न करके मैंने सामने से साक्षात उन्हें आते देखा और प्रणाम किया । मैं गोदी में अपने बहुत सुंदर नन्हे-मुन्ने भतीजे को लिए थी । उन्होंने उसका नाम पूछा तो मैंने बताया कि मेरी माँ ने इसका नाम दिव्यदर्शन रखा है । बड़े प्रसन्न हुए और मेरी गोदी से उसे अपनी गोद में ले लिया । गोद में लेते समय मेरी उँगली में पहना हुए मिजराब उनके हाथ में छू गया तो बोले, ''सितार बजाती हो ?'' मैंने कहा, 'जी । बी.ए. के कोर्स में मैंने सितार को एक विषय के रूप में लिया है ।' वह बोले, ''अरे, तब तो खूब सीख लिया होगा । कहाँ रहती हो ?'' मैंने कहा, 'जी हम जहाँ खड़े हैं, वहीं ऊपर की मंजिल पर रहती हूँ ।' वह तुरंत बोले, ''चलो चलते हैं ।'

मेरी तो रूह काँप गई । अरे, सुबह-सुबह एकदम अस्त-व्यस्त पड़ा होगा मेरा कमरा । बैठक में भाईसाहब सोए होंगे । अब क्या करूँ ...? पर भला उन्हें मना भी कैसे किया जा सकता था । रसोई से बाहर आकर मेरी भाभी ने चरण स्पर्श किए । उन्हें स्नेहिल आशीर्वाद मिला । वह बोलीं, ''अहोभाग्य हमारे, पधारिए चाय बनाती हूँ ।'' तो वे बोले, ''चाय नहीं, हमें तो बिटिया का सितार देखना है ।''

मेरे गुरु पं. लालमणि मिश्र जी ने मुझे बहुत अच्छा तरपदार सितार

परिचय

जन्म : १९३५, मुरादाबाद (उ.प्र.)
परिचय : हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पुष्पा भारती जी ने 'मुक्ताराजे' के नाम से लेखन की शुरुआत की । राजस्थान शिक्षा विभाग के आग्रह पर ''एक दुनिया बच्चों की'' का संपादन किया । आपको 'रमा पुरस्कार', 'स्वजन सम्मान', 'भारती गौरव पुरस्कार', 'सारस्वत सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'प्रेम पियाला जिन पिया' (संस्मरण), 'रोचक राजनीति' (कहानी संग्रह), 'सरद संवाद' (साक्षात्कार), 'सफर सुहाने' (यात्रा विवरण), 'अमिताभ आख्यान' (जीवनी) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संस्मरण में पुष्पा भारती जी ने 'निराला' जी के निश्छल स्वभाव, संगीत प्रेम एवं सहृदयता आदि गुणों को दर्शाया है । पुष्पा भारती जी की स्मृति मंजूषा के ये मोती अनमोल हैं ।

मौलिक सृजन

'बचपन के दिन सुहावने' संबंधी अपने अनुभव लिखो ।

संभाषणीय

'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।' विषय पर वार्तालाप करो ।

श्रवणीय

अपनी माँ से उसके शालेय जीवन का कोई संस्मरण सुनो ।

बनारस से लाकर दिया था । वह बोले, ''तुम्हारे पास तबला है ?'' मैंने तबला निकाला और वहीं जमीन पर बैठकर महाकवि ने मेरे सितार के तारों के सुर मिलवाए । तबला यहाँ-वहाँ ठोककर सुर में किया और बोले, ''लो बजाओ, बताओ क्या सुनाओगी ?'' मैंने लगभग काँपती-थरथराती आवाज में कहा, ''जी, जैजैवंती सुनाऊँ ?'' तबले पर स्वयं थाप मारते हुए बोले, 'वाह-वाह । जरूर सुनाओ ।'' मेरे अंदर भी पता नहीं किन नये प्राणों का संचार हुआ और मैंने मन-ही-मन गुरुदेव को प्रणाम कर बजाना शुरू किया । कितनी देर तक मैं बजाती रही और वह ''अहा-अहा, वाह-वाह'' करते हुए सुनते रहे । मुझे दीन-दुनिया का ख्याल ही नहीं रहा । बस बजाती ही रही । झाला बजाकर जब खत्म हुआ और उनके चरण छुए तो मुझे लगा कि मेरा जन्म सफल हो गया । संगीत सीखना सार्थक हो गया ।

वह तो बस बिना कुछ बोले एकदम फट से खड़े हो गए और बोले, ''चलो मेरे साथ ।'' भाभी चाय-नाश्ता परोस चुकी थी पर वह कहाँ रुकने वाले थे, ''चलो मेरे साथ'', कहकर चल दिए । भाभी ने इशारे से कहा - ''जाओ, साथ में ।'' कहाँ जाना है ? पूछने का प्रश्न ही नहीं था । मंत्रचालित-सी उनके पीछे-पीछे चलने लगी ।

गली के छोर पर रामकृष्ण बजाज की कपड़ों की दुकान थी । वहाँ चबूतरे पर मुझे ले जाकर दुकान मालिक से बोले, ''बिटिया ने बहुत अच्छा सितार सुनाया है । यह जो भी माँगे, इसे दे देना । भले ही सिल्क का थान माँगे, तो भी ना मत करना ।''

और मुझे वहीं छोड़ स्वयं यह जा-वह जा...।

मेरे घर से मिले संस्कार ऐसे थे कि यूँ कुछ भी ले लेने का प्रश्न ही नहीं उठता था । मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, ''नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए ।'' वह बोले, ''ऐसा कैसे हो सकता है-निराला जी जब पूछेंगे तो मैं क्या जवाब दूँगा । कुछ-न-कुछ तो आपको लेना ही होगा । बताइए क्या दूँ ?'' मेरे कुछ न लेने की जिद पर सचमुच उन्होंने अपने नौकर को एक थान सिल्क का पकड़ाते हुए कहा, ''जाओ इनके घर तक पहुँचा आओ ।''

अंत में विवश होकर मैंने अपने पसंद की छींट के एक कपड़े की ओर इशारा करके कहा, ''इसमें से एक ब्लाउज का कपड़ा दे दीजिए ।'' वह कपड़ा माथे से लगाया और घर तक ऐसे आई, जैसे जमीन पर नहीं चल रही, बल्कि हवा में उड़ती आ रही हूँ ।

इसी के साथ सुनाती हूँ, इस घटना के बीसियों बरस बाद की एक और बात । तब मैं मुंबई में रहती थी । दोपहर में भारती जी का अपने

कार्यालय से फोन आया कि थोड़ी देर में शिवानी जी घर पहुँच रही हैं । शाम को मुझे आज थोड़ी-सी देर हो जाएगी । तुम उनका खयाल रखना । शिवानी जी आईं, हम दोनों यहाँ-वहाँ की बातें करते रहे । बातों ही बातों में निराला जी की बात चली तो मैंने उन्हें सितारवाला संस्मरण सुनाते हुए कहा, 'कैसी मूर्ख थी मैं उस दिन । सचमुच कम-से कम एक बढ़िया साड़ी तो ला ही सकती थी । मैंने सिर्फ एक ब्लाउज का कपड़ा मात्र लिया और चली आई ।'' तो वह बोलीं, ''तुम्हें पता नहीं पुष्पा कि मैंने क्या मूर्खता की । गुरु रवींद्रनाथ टैगोर ने मुझे अपना पूरा चोगा ही उतारकर दे दिया था । कितनी-कितनी बड़ी मूर्खता की कि उस अमूल्य चोगे को काटकर मैंने पेटीकोट सिला लिए ।'' अब सचमुच मेरे अवाक रह जाने की बात थी -हाय, यह क्या किया दीदी आपने... ? आज वह चोगा होता, तो हम जैसे कितने अनगिनत लोग उसे देखकर-छूकर धन्य हो लेते ।

अपनी स्मृति की मंजूषा में ऐसे अनिगनत माणिक-मोती समेटे और भी अनेक 'मूर्ख' और 'महामूर्ख' होंगे जरूर । आपको जब भी जहाँ भी मिलें, मेरा प्रणाम उन्हें दें ।

—— o ——

लेखनीय

'कला से जीवन समृद्ध बनता है', विषय पर वाक्य लिखो ।

पठनीय

भारतीय लोककथा और लोकगीत का आशय समझते हुए मुखर-मौन वाचन करो ।

शब्द वाटिका

तहमद = लुंगी जैसा वस्त्र
देवतुल्य = ईश्वर समान
मिजराब = सितार बजाने का एक तरह का छल्ला
थान = निश्चित लंबाई का कपड़ा
झाला = एक वाद्‌य
चोगा = घुटनों तक का लंबा ढीला-ढाला पहनावा, लबादा
मंजूषा = पेटी

मुहावरे

रूह काँप जाना = बहुत डरना
मंत्रचालित होना = वश में होना

*** सूचनानुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

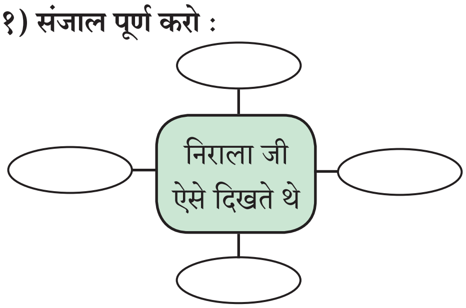

(२) लिखो :

१. पाठ में आए दो संगीत वाद्‌यों के नाम -

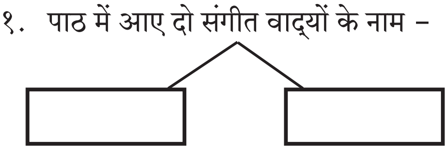

२. पाठ में आए दो शहरों के नाम -

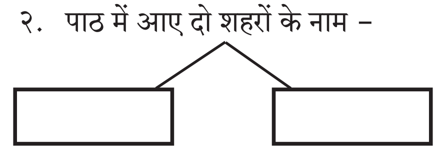

(३) उत्तर लिखिए :

१. लेखिका के गुरु –

२. लेखिका ने सुनाया राग –

३. 'निराला' जी के रहने का स्थान –

४. मुंबई में लेखिका को मिलीं –

सदैव ध्यान में रखो

महान व्यक्तियों की स्मृतियाँ चिरंतन रहती हैं ।

भाषा बिंदु

पाठ से किन्हीं पाँच वाक्यों को चुनकर उनके उद्‌देश्य और विधेय निम्न तालिका में लिखो :

	वाक्य	उद्‌देश्य	विधेय
१.			
२.			
३.			
४.			
५.			

उपयोजित लेखन

मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखो और शीर्षक दो :

गुणग्राहक राजा – कलाकारों को इनाम की घोषणा – इनाम के लिए कलाकारों को आमंत्रित करना – घूसखोर द्‌वारपाल

एक कवि का आना – द्‌वारपाल का घूस माँगना – कवि की चतुराई – कवि द्‌वारा इनाम का आधा हिस्सा देने का आश्वासन

कविताएँ सुनकर राजा का प्रसन्न होना – कवि का सौ कोड़े इनाम माँगना – राजा का आश्चर्य चकित होना

कारण बताना

शीर्षक

HEY379

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जानकारी लिखो ।